मैथिली महाकाव्यक प्रतिबिम्ब : एक अवलोकन

डा. मनोज कुमार साह
सहायक प्राध्यापक,
मैथिली विभाग,
रामकृष्ण महाविद्यालय, मधुबनी

डॉ. हीरा मंडल मैथिली साहित्य जगतमे लब्धप्रतिष्ठित प्राध्यापक बनि सेवा निवृत भेलाह। मृदुभाषी डॉ. मंडल सभदिन छात्राक बीच प्रशंसनीय रहलाह। वर्तमान समयमे हिनक कतेको शिष्य सहायक प्राध्यापक पदपर कार्यरत छथि। साहित्य जगतमे अपन एकमात्रा पोथी 'मैथिली महाकाव्यक प्रतिबिम्ब' लऽ उपस्थित भेलाह, आ खूब प्रशंसा बटोरलाह। हिनक व्यक्तित्वकेँ देखैत प्रो. इन्द्रकान्त झा कहैत छथि–''डॉ. हीरा मंडल मितभाषी छथि। आभामे गांभीर्य देखब। ओ मैथिलीक चालीस गोट महाकाव्यक विश्लेषण कए मैथिली साहित्यक थारीमे परसि देलनि अछि। पाठकगण आनन्द लिउऽ हुनक उपस्थापनक कला, दृष्टिकोणक चारूता, रचना शैली आ भाषाक चातुर्यक। जे पाठक जतेक अँखिगर होएब से ततेक आनन्दक अनुभूति करब।''[1]

अपन सहज आ सरल भाषा शैली लऽ कऽ विख्यात छथि। कुम्हार जहिना माटिके सानि, मूर्तिक शिल्प आ आकार प्रदान करैत छैक, तहिना कोनो साहित्यकार आ समीक्षक साहित्यकेँ पढ़ि मंथन कऽ अपन समीक्षा प्रस्तुत करैत अछि। डा. मंडल जाहि विधा के अपनौलनि ओ एकटा सधारण काज नहि थिक। साहित्यक सर्वाधिक जटिल विधा महाकाव्य होइत अछि, तकरे परिणाम थिक जे एखन सभ विधासँ कम रचना महाकाव्य विधामे भेल अछि। ई विसंगति मैथिलीएटा साहित्यमे छनि से बात नहि थिक, सभ साहित्यमे रचनाक संख्यामे महाकाव्य विधामे कम अछि। एहि दुलर्भ काजकेँ बीरा उठा डा. मंडल पूरा कयलनि। हिनक एकांत सारस्वत साधनाक फल हमरालोकनिकेँ 'मैथिली महाकाव्यक प्रतिबिम्ब रूपमे भेटैत अछि। एहि दुलर्भ काज हेतु डा. मंडल सभदिन सराहनीय रहत।

'मैथिली महाकाव्यक प्रतिबिम्ब' समीक्षात्मक पोथी थिक। समीक्षात्मक पोथी के आलोचना करब बड्ड दुर्लभ काज होइत छैक। जकर मूल कारण काठ वा कोनो धातुक साँचरमे जहि द्रव्य क डालल जाय वैह अकार ग्रहण कऽ लैत अछि, मुदा मोनकेँ कोनो साँचा नहि होइत छैक। जतेक तरहक आलोचक ततेक तरहक साँचामे गढ़ैत अछि। तथापि जेह वलार बहैए वैह अपनाबए पड़ैत छैक। वर्तमान परिपाटी समीक्षात्मक पोथीक खूब जोर–शोरसँ समीक्षा कऽ रहल अछि...। अस्तु।

मैथिली साहित्यमे महाकाव्य पूर्णतः आधुनिक कालक उपज थिक। मध्यकालमे गीत आ कविताक खूब रचना भेल। महाकवि विद्यापति राधा–कृष्णक स्नेह के अपन गीत माध्यमे खूब उजागर कयलनि। ओना देखल जाय तखन सम्पूर्ण मध्यकाल कृष्ण काव्यक परम्परा रहल, मुदा महाकवि विद्यापति गीत लिख रहि गेलाह, मैथिली साहित्य जगतमे महाकाव्यक रचना नहि कयलनि। महाकाव्यक परंपराक श्री गणेश मैथिली साहित्य जगतमे मनबोध 'कृष्ण–जन्म' लिख कऽ कयलथि। महाकाव्यक कसौटी पर भने खड़ा नहि उतड़ि सकल मुदा महाकाव्य परम्पराक नींव डालि देलनि। हिनक बाद चन्दा झा 'मिथिला भाषा रामायण' लिख मैथिली साहित्य भंडार केँ पहिल प्रमाणित महाकाव्य देलथि। दोसर दिस कृष्ण काव्य परम्परा जे चलि आबि रहल छल, तकरा तोड़ि राम काव्य परम्परा स्थापित कयलथि। आधुनिक कालक जनक श्रेय हिनके जाइत छनि। आर बहुत रास कारण छैक, अनुवाद, भूमिका आदि लिखबा मैथिली साहित्य जगतमे पहिल बेर पुरान परिपाटीकेँ तोड़ि एकटा नव परम्पराक स्थापित करब, तेँ हेतु आधुनिक काल जनकक श्रेय हिनके जाइत छनि। चन्दा झा जाहि समयमे मिथिला भाषा रामायण लिखलथि, एहन बात नहि छलैक जे साहित्य जगतमे रामकाव्यक परम्परा नहि छलनि। मैथिली साहित्य जगतमे राम काव्यक परम्परा नहि छलैक, मुदा आदिकवि वाल्मिकि 'रामायणम्' संस्कृतमे रचना कय पहिल नींव रामकाव्यक परम्परा स्थापित कयलनि, मुदा मैथिली साहित्यमे अबैत–अबैत बहुत रास समय बीत गेलनि। अस्तु!

डॉ. मंडल अपन पोथीमे चालीस गोट महाकाव्यक समीक्षात्मक निबंध प्रस्तुत करैत अछि। एहि पोथी जाहि महाकाव्य पर निबंध प्रस्तुत अछि, देखल जा सकैछ, यथा– कृष्ण जन्म, मिथिला भाषा रामायण, रमेश्वर चरित मिथिला रामायण, एकावली–परिणय, सुभद्राहरण, अम्बचरित, कीचक बध, रावण बध, राधा विरह, चाणक्य, कृष्ण चरित, रूक्मिणी परिणय, जय राजा सलहेस, गंगा, अगस्त्यायनी, त्रिापुण्ड, शान्तिदूत, स्मृति साहस्त्राी, सीतायन, व्यथा, श्री हनुमान चरित, दत्तवती, पराशर, महाभारत, श्री चैतन्य चन्द्रायण, विद्यापति–रहस्य; कादम्बरी, विश्वामित्रा, नचिकेता, प्रतिज्ञा पाण्डव, अनंग कुसुमा, राम सुयश सागर, मैथिली गीत रामायण, शकुन्तला, मुक्त मधुप, श्री सीतावतरण महाकाव्य, बुद्धायन, नटवर लीला महाकाव्य, पांचाली–परिणय, कन्दर्प कानन आदि।

डॉ. मंडल चालीसो महाकाव्यक संक्षेपमे एकटा सार प्रस्तुत कयने छथि। अपन आलेखमे कोन महाकाव्य कथीमे विभक्त थिक? कतेक सर्ग वा खंड अछि? कोन अलंकार, रस, छन्दक प्रयोग भेल अछि? कथा वस्तु की छनि? सबटा क्रमबद्ध रूपमे सजाकऽ लिखने छथि। हिनक पोथी साहित्यनुरागीकेँ अह्लादित करैत छनि। हम पूर्वमे चर्च कऽ चुकल छी जे जतेक तरहक आलोचक ततेक तरहक साँचा। कृष्ण जन्मक प्रसंग हिनक मन्तव्य छनि–''मन बोधक कृष्णजन्म

मैथिल संस्कृतिक उन्मुक्त दस्ताबेज थिक। ई प्रथम कवि भेलाह जे विद्यापतिक सम्प्रदायकेँ छोड़ि एक गोट नव दंगक काव्य रचना कयलनि। श्रृंगार रसकेँ छोड़ि भक्तिरसकेँ अपनौलनि एवं गीतकेँ छोड़ि चौपाई छन्दक प्रयोग कयलनि।''[2]

पृ सं.– 03–04

मैथिलीक पहिल प्रमाणिक महाकाव्य 'मिथिला भाषा रामायण'क प्रसंगमे हिनक मन्तव्यकेँ देखल जा सकैछ–''राम काव्यक परम्परामे कवीश्सर चन्दा झा कृत 'मिथिला भाषा रामायण' अमूल्य निधि थिक। एहिमे प्रबन्ध काव्यक प्रत्येक लक्षण परिलक्षित होइत अछि। विषय–वस्तु, वर्णन विन्यास, प्रवाहपूर्ण भाषा, अभिव्यक्तिक कौशल एवं अभीष्ट उद्देश्यसँ मैथिली महाकाव्यक विकास क्रममे प्रथम पौदान पर अछि। आरम्भमे संस्कृत श्लोकमे वन्दना अछि। सम्पूर्ण ग्रन्थमे चौपाइ एवं दोहा छन्दक प्रधानता अछि।''[3] इयैह कृति कवीश्वर चन्दा झाकेँ मैथिली साहित्यमे अमर बनौलनि। सात(07) काण्ड एवं चौंसठ(64) अध्यायमे विभक्त महाकाव्य वाल्मिकी 'रामायणम्' सँ किछु भिन्न छैक। सर्गक अंतरालमे अलंकार आ छंदक परिवर्तन सेहो भेल अछि। डा. मंडल पहिल प्रमाणित महाकाव्य 'मिथिला भाषा रामायण' के सुंदर आ मनोरम ढ़ंगसँ आलेख प्रस्तुत कयलथि। 'रमेश्वर चरित मिथिला रामायण' मे कविवर लाल दासकेँ काव्य कुशलताक विलक्षणता आ पाण्डितय प्रकर्षक परिचय दैत छथि। कविशेखर बदरीनाथ झाकेँ साहित्य जगतमे मैथिलीक 'माघ' मानल जाइत छनि। हुनक ललित पदावली आ रस, ध्वनि आदि पर डॉ. मंडल विशेष जोर देने छथि।

डॉ. मंडल 'एकावली–परिणय' महाकाव्यकेँ शुरूआतमे विप्रलंभ श्रृंगार तथा मध्यसँ संयोग श्रृंगारक शिष्ट–विशिष्ट वर्णक मानैत छथि। 'सुभद्राहरण' महाकाव्यकेँ प्रकृति चित्राण हेतु विशिष्ट मानैत छथि। मैथिली साहित्यमे सीताराम झाकेँ कविवरक उपाधिसँ सम्मानित कयल गेल अछि। कविवर 'अम्बचरित' महाकाव्य लिख कऽ मैथिली साहित्य जगतमे अनमोल कृति देलथि। एहि महाकाव्यक प्रसंगमे हिनक विचार छनि–''कविवर काव्यक समस्त छटाकेँ संजोगने छथि तथा हुनक पाण्डित्यक प्रभा सेहो एकर पात–पातपर विकीर्ण अछि।''[4]

पृ सं.– 19

प्रो. तंत्रानाथ झाक 'कीचक बध' महाकाव्यक प्रसंगमे लिखैत छथि–''ई महाकाव्य संस्कृतक नहि पाश्चातय महाकाव्यक शैली अर्थात् अंग्रेजीक ब्लैकवर्स(अमित्राक्षर छन्द)मे लिखित मैथिली भाषाक अभिनव ढ़ंगक महाकाव्य थिक। एहिमे चरित्रा विकासक जे गहनतम योजना अछि से मैथिली साहित्यक हेतु सर्वथा मौलिक वस्तु अछि। एकर प्रधान रस वीर थिक। एहि महाकाव्यक विशेषता अछि–चरित्रा–चित्राणमे मनोवैज्ञानिक प्रयोग, मानवीय अन्तद्वन्द्वक चित्राण, नारी हृदयक विवशतापूर्ण कातरताक हृदयग्राही वर्णक ओ अभिनव छन्दक प्रयोग। अपन एहि अभिनव छन्द प्रयोगहिक कारणेँ तंत्रा नाथ बाबू मैथिलीक माइकेल रूपेँ ख्यात छथि।''[5]

पृ सं.– 22

काशीकान्त मिश्र 'मधुप'केँ 'राधा विरह' महाकाव्य पर साहित्य अकादमी 1970ई. मे पुरस्कृत कए सम्मानित कयलनि। सतरह सर्गक दीर्घ महाकाव्य पर विद्वतापूर्ण आलेख डा. मंडल प्रस्तुत कयने छथि। एहि सन्दर्भमे हिनक विचार देखल जा सकैछ–''सुन्दर कल्पना पर आश्रित मैथिलीक एहन महत्त्वपूर्ण महाकाव्य थिक जाहिमे आलंकारिक भाषाक प्रचुर प्रयोग कयल गेल अछि। एकरा पाण्डित्यपूर्ण वर्णन वैशिष्टयक कारणेँ आधुनिक साहित्यक निधि मानल गेल अछि। संस्कृत महाकाव्यक परिपाटीक अनुसारे एइमे कथानकसँ बेसी वर्णनक महत्त्व बुझना जाइछ। एहिमे श्रृंगार रस अंगी रूपमे एवं अन्य रस अंग रूपमे आयल अछि।''[6]

पं. जीवनाथ झाक 'रावण बध' महाकाव्यकेँ वीर रस अंगीरूपमे मानैत छथि। काशी कान्त मिश्र 'मधुप'क 'राधा विरह' महाकाव्य जाहि पर साहित्कार के 1970 ई. क साहितय अकादेमी पुरस्कार सेहो प्राप्त भेलनि। अपन विलक्षण आलेखसँ पाठक मोन जीत लेलनि। दीनानाथ पाठक 'बन्धु' क 'चाणक्य' एकटा ऐतिहासिक महाकाव्य थिक। वीर रसक प्रधानता एहि महाकाव्यमे डॉ. मंडल नन्दवंशक नाश आ मौर्यवंशक स्थापित रोचकताक संग अपन आलेख प्रस्तुत कयने छथि। प्रो. तन्त्रानाथ झाक 'कृष्ण चरित' दोसर महाकाव्य थिक। एहि पोथी पर कविकेँ 1979 ई. मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त भेलनि। डॉ. मंडल एहि पोथीपर गुरूकुल परंपरा, गुरू शिष्य सम्बन्ध, अति थिक सेवा आदि पर विलिक्षण वर्णन कयने छथि।

डॉ. मंडल चालीस गोट महाकाव्यकेँ अपन समीक्षात्मक पोथीक मादे महाकाव्यक सभ पक्षकेँ विलक्षण ढ़ंगसँ वर्णन कयने छथि। सभ महाकाव्य उल्लेख करब आ हिनक विचार के प्रकट करब उपयुक्त नहि बुझैत छी, तथापी डॉ. मंडल महाकाव्य पर जे आलेख प्रकट कयलनि ओहिमे ठाम–ठाम पर प्रकृति चित्राण, रस, अलंकार, छंद, कथा वस्तु स्पष्ट रूपसँ झलकैत छनि वा दोसर शब्दमे डॉ. मंडल महाकाव्यक खोंइछा छोराक विलक्षण वर्णन प्रकट कयलनि। पाठकलोकनि सर्वदा एहि पोथीक लाभ लैत रहताह। हमर आशा नहि पूर्ण विश्वास थिक।

संदर्भ संकेतः–

1. मंडल, डॉ. हीरा, मैथिली महाकाव्यक प्रतिबिम्क; प्र. सं.–2016 प्रकाशक–नवारम्भ पटना/मधुबनी; पृ. सं.– दू शब्द
2. वैह; पृ. सं.– 03,04
3. वैह; पृ. सं.– 08
4. वैह; पृ. सं.– 19
5. वैह; पृ. सं.– 22
6. वैह; पृ. सं.– 28